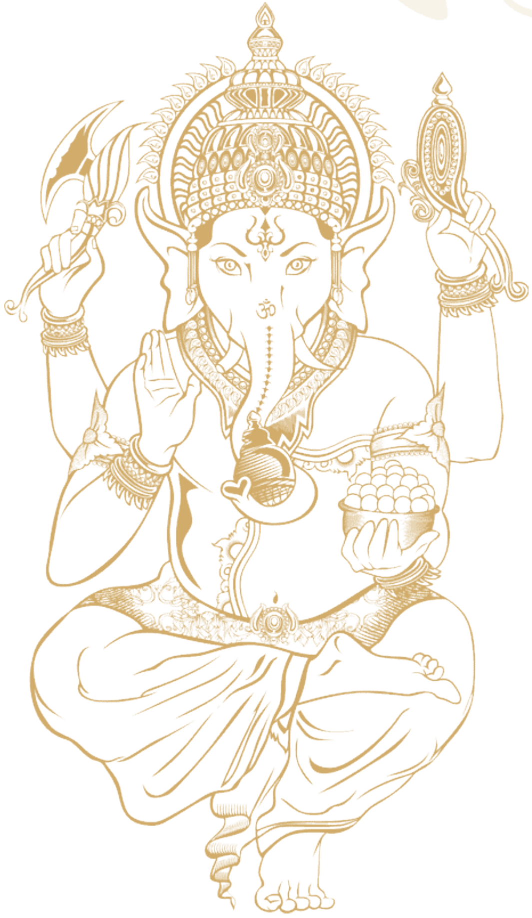

Bhawani Shankar pareek

22 Feb 1990

09:00 AM

Bikaner

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119112601**

तिथि 22/02/1990 **समय** 09:00:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Bikaner **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:23
अक्षांश 28:01:00 उत्तर **रेखांश** 73:22:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:36:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:30:35 घं
वेलान्तर	00:13:35 घं
सूर्योदय	07:08:43 घं
सूर्यास्त	18:31:48 घं
चैत्रादि संवत	2046
शक संवत	1911
मास	फाल्गुन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	12
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	व्यतिपात
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भे-भैरव
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

सूर्य 4वर्ष 11मा 14दि

राहु
06/02/2012
06/02/2030

राहु	19/10/2014
गुरु	14/03/2017
शनि	19/01/2020
बुध	07/08/2022
केतु	26/08/2023
शुक्र	25/08/2026
सूर्य	20/07/2027
चन्द्र	18/01/2029
मंगल	06/02/2030

योगिनी

संकटा 6वर्ष 7मा 8दि

संकटा
01/10/2024
01/10/2032

संकटा	12/07/2026
मंगला	02/10/2026
पिंगला	13/03/2027
धान्या	11/11/2027
भ्रामरी	01/10/2028
भद्रिका	11/11/2029
उल्का	13/03/2031
सिद्धा	01/10/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:04:55	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	---	0:00			
सूर्य			09:31:21	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	शत्रु राशि	1.41	पुत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			28:59:18	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	मंगल	सम राशि	1.25	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			23:23:01	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	शनि	मित्र राशि	1.51	भ्रातृ	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			20:51:09	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	सम राशि	1.08	मातृ	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		07:05:48	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.35	ज्ञाति	धन	क्षेम
शुक्र			00:39:47	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	राहु	मित्र राशि	1.27	कलत्र	कलत्र	जन्म
शनि			27:44:31	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.25	अमात्य	आयु	जन्म
राहु			22:44:35	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			22:44:35	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

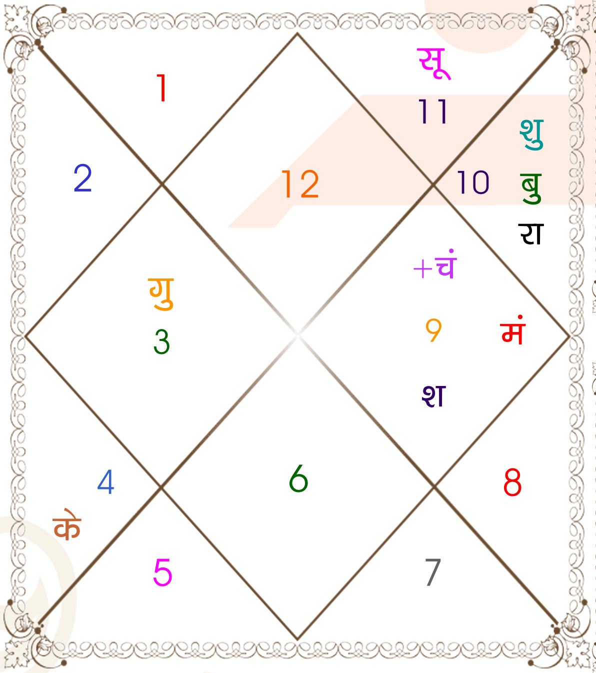

चन्द्र कुंडली

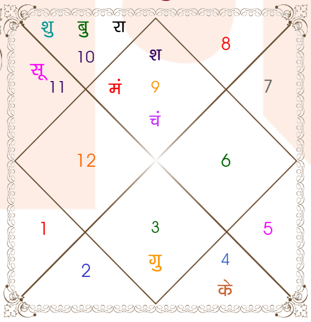

नवमांश कुंडली

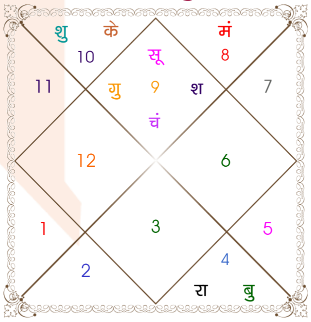

सर्वाष्टकवर्ग

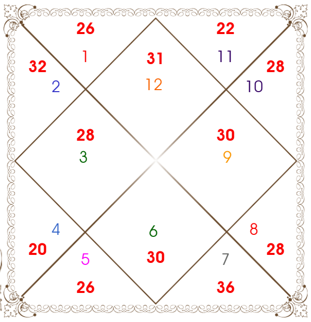

दशमांश कुंडली

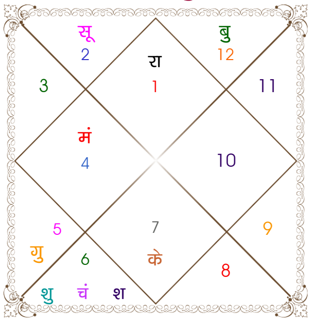

Radhe Horoscope
Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan
9509496711
Pandit Bhawani Shankar Pareek

नक्षत्रफल

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है अतः आपकी जन्मराशि धनु तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय,योनि नकुल, नाड़ी अन्त्य गण मनुष्य तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भे" या "भै" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

समाज में आप एक गणमान्य व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मुख्य रूप से सात्विक गुणों से सम्पन्न रहेंगे। आप अपने कठिन से कठिन कार्य या समस्या को शांताचित्त से समाधान करने के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे। जीवन में नाना प्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। धन से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन में इसका आपके पास कम ही अभाव रहेगा। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कार्यो में पारंगत होने के कारण आप समाज में एक विद्वान के रूप में ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित कर सकेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सु खी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप स्वभाव से ही विनम्र होंगे तथा सभी लोग आपकी विनयशीलता से प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेगी तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का आप नियमपूर्वक अनुपालन करने मे प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आपमें कृतज्ञता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोक प्रिय रहेंगे तथा उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने में सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपकी शारीरिक आकृति स्थूल तथा कद सामान्य रहेगा। साथ ही आप एक शूरवीर एवं साहसी व्यक्ति होंगे। तथा अपने अधिकाँश कार्यो को साहस पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त विवाद आदि में आप शत्रु पक्ष पर विजय

प्राप्त करने में सर्वदा सफल रहेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत्।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके मन में दान शीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी। तथा हृदय में दया एवं करूणा का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप अच्छे कार्यो को ही सम्पन्न करेंगे। जिससे समाज में अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे। साथ ही आप एक प्रभुता सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप स्त्री तथा पुत्र आदि के सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा। परन्तु कभी कभी आप अभिमान का प्रदर्शन भी लोगों के समक्ष करेंगे। जिससे लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट भी रहेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरुप वाला तथा अभिमानी होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यो में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरुष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरुषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा गला दीर्घ रहेगा। तथा ओंठ, दान्त एवं कानों में स्थूलता रहेगी। एवं भुजाएं मजबूत तथा मांसल रहेंगी। आप अपने

पैतृक धन से सुसम्पन्न रहेंगे। तथा आजीवन सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आपके मन में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा जीवन में समयानुसार आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। लेखन कार्य में भी आप रूचिशील रहेंगे। तथा समय समय पर कविता सृजन आदि में सफलता तथा ख्याति प्राप्त करते रहेंगे। आपका शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा तथा अन्य लोग आपके बल से प्रभावित रहेंगे। आप एक उच्च कोटि के कुशल वक्ता होंगे। तथा अपने प्रभावशाली वक्तव्यों तथा कार्यो से अन्य जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकेंगे। समाज में सभी के प्रति मन में आपके हार्दिक सम्मान रहेगा। चित्रकला के प्रति आपमें विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वरूप भी गम्भीरता से युक्त रहेगा तथा अधिकांश कार्य भी गम्भीरता से ही सम्पन्न होंगे। धर्म में भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में इसका ज्ञानार्जन भी करेंगे। आपके अपने भाईयों से सामान्य संबंध रहेंगे। आप स्नेह तथा समानता के व्यवहार से ही वश में रहेंगे। किसी अन्य दवाब में आपसे कोई भी कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। न हीं आप किसी कार्य को करने के लिए तैयार होंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्वाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखे गोल तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगी तथा हाथ एवं कन्धों की लम्बाई भी कुछ अधिक ही रहेगी। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता है। पानी के नजदीक निवास करना या भ्रमण आदि करने में आप रूचिशील रहेंगे। एवं ऐसे अवसरों को प्राप्त करने के लिए भी आप प्रयत्न शील रहेंगे। आप गूढ़ से गूढ़ विषय का ज्ञान प्राप्त करके उसे हृदयगम करने में भी सफल रहेंगे। आप प्रायः प्रसन्नचिन्त ही रहेंगे एवं अनावश्यक चिन्ता या दुख मन में नहीं रखेंगे। आपकी शरीर की अस्थियां भी मजबूत होंगी। साथ ही कृतज्ञता के भाव से भी आप सुशोभित रहेंगे। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे। तथा हार्दिक रूप से उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऽळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी व्यक्ति होंगे तथा नित्य किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप सक्रिय रहेंगे तथा आराम से नहीं बैठ सकेंगे। आप बोलने में अत्यन्त ही प्रवीण होंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। त्याग

की भावना का भी आप में नैसर्गिक समावेश रहेगा। तथा आवश्यकतानुसार इस प्रवृति का आप अनुपालन करेंगे। साथ ही आप एक साहसी पुरूष भी होंगे। तथा अधिकतर सांसारिक समस्याओं का साहसपूर्वक समाधान करेंगे। आपके शत्रु भी आपसे हमेशा पराजित रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकार प्राप्तवर्ग तथा सम्पन्न लोंगों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽशिवभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी सक्षम रहेंगे तथा स्वभाव से ही विनम्र एवं सुशील रहेंगे। आप एक चरित्रवान पुरूष होंगे जो अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय रहेगा। आप स्पष्ट बोलने में विश्वास करेंगे। अतः सभी लोग आपकी स्पष्टवादिता से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए खूब सोचविचार कर व्यय करेंगे। जिससे अनावश्यक आर्थिक संकट उत्पन्न न हो सके।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके समस्त शारीरिक अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ माने जाएंगे। तथा सभी परिवारिक जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकला एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी। इसके अनुपालन के लिए आप हमेशा जीवन में प्रयत्न शील रहेंगे। इसके साथ ही आपका स्वभाव शान्त होगा। तथा अन्य किसी के प्रति आप के मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक सुशील गुणवती एवं बुद्धिमती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे तथा समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति भी करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी। जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका शरीर स्थूल भी होगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रहकर समाज में आदरणीय रहेंगे। तथा सभी

वर्गों के मध्य लोकप्रियता भी प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों से श्रेष्ठ समझे जाएंगे। आप धार्मिक प्रवृति से भी युक्त रहेंगे अतः देवता ब्राहमण एवं गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आप अत्यन्त ही सुमधुर गति से गमन करेंगे। परन्तु सहनशीलता का अभाव होने के कारण कई बार अनावश्यक समस्याओं को उत्पन्न करेंगे एवं परेशानी की अनुभूति भी करेंगे।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः धार्मिक कार्य कलापों में आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। तथा देवताओं एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। कभी कभी गर्व की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी। तथा समाज में अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का आप प्रदर्शन करेंगे। दया एवं करूणा की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। शारीरिक रूप से आप बलशाली रहेंगे तथा स्वभुजबल से अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही विविध प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा तथा अन्य बहुत से लोग आपके द्वारा सुख को प्राप्त करेंगे।

समाज में आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से सम्पन्न रहेंगे। आपकी आँखे भी बड़ी बड़ी रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगे। आपका वर्ण सुन्दरता लिए गौर वर्ण होगा। नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगे अर्थात् आप किसी नगर या समाज के गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही परोपकार की भावना से युक्त रहेंगे। तथा अन्य जनों की भलाई के कार्यों को नित्य चतुराई से सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान को अर्जित करने में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा अन्य धनी लोग भी आपका हृदय से आदर करेंगे। साथ ही आप विद्वान होंगे एवं कई संस्थाओं के प्रधान या अध्यक्ष भी हो

सकते हैं। माता पिता का आपके प्रति अत्यन्त ही स्नेह का भाव रहेगा एवं आपका भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे

आपको सहपोग प्रदान करगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यो में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी, तिथियां भरणी नक्षत्र वज्रयोग तैतिल करण शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3, 8, 13 तिथियों भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिल करण में कोई में कोई भी शुभ कार्य न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा एवं मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में सर्वथा वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक चिन्ताऐं शारीरिक परेशानी व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा शुभ कार्यो के सिद्ध होने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा मंगल एवं वृहस्पति के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र को किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा एवं शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।